P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

श्री अरविन्द का राष्ट्रवाद एवं भारतीय संस्कृति

रणसिंह यादव
सहायक आचार्य,
इतिहास विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश

आधुनिक राज्य राष्ट्रवाद, सार्वभौमिकता तथा राष्ट्रीय शक्ति के तीन मूल विचारों पर आधारित है। यह सभी विचार भारतीय संस्कृति, जो आत्मा को हमारी सत्ता के सत्य के रूप में मानती है और हमारे जीवन को आत्मा की अभिवृद्धि एवं विकास के रूप में मानती है। राष्ट्रवाद से अभिप्राय राष्ट्र के लोगों को मिलजुलकर रहने की भावना से है, यह एक ऐसी भावना है जो उन्हें विभिन्नताओं और भेदभावों के बावजूद इकट्ठा होने के लिए प्रेरित करती है। ये मिलजुल कर रहने की प्रवृति प्राचीनकाल से भारतीय संस्कृति में निहित है।

सैद्धान्तिक दृष्टि से राष्ट्रवाद एक मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक विचार है। इसी राष्ट्रीय भावना के विकास के अनेकता में एकता का आधार प्राप्त करना आवश्यक है। यही राष्ट्रवाद की भावना भारतीय संस्कृति के मूल आधार 'वसुधैव कुटुम्बकम' पर आधारित है। श्री अरविन्द घोष भारतीय पुनर्जागरण और भारतीय राष्ट्रवाद की एक महान विभूति थे। उनके दिए गए भारतीय स्वरूप का (नैतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उपलब्धियाँ) भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे सांस्कृतिक आधार पर भारत की एकता में विश्वास करते हैं, उनका स्वरूप संकुचित अर्थ में धार्मिकता का नही है, बल्कि विविधताओं के बावजूद भारतीय इतिहास में एकता का एक अलग न होने वाला सूत्र पाया जाता है। इसलिए राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में श्री अरविन्द का दृष्टिकोण सांस्कृतिक विविधतावादी व समन्यवादी था।

मुख्य शब्द : राष्ट्रवाद, पुनर्जागरण, सांस्कृतिक, विविधता, सार्वभौमिकता, आध्यात्मिक विचार, संस्कृति, समकालीन।

प्रस्तावना

भारत के राष्ट्रीय विकास के विषय में श्री अरविन्द की विचारधारा रूढ़िवादी या संकुचित दृष्टि वाली नहीं थी। श्री अरविन्द ने भारत में अंग्रेजों की नीतियों और अंग्रेज अफसरों के व्यवहार पर भी करारा प्रहार किया। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह प्रतिध्वनित किया कि अंग्रेजों की नीतियों ने भारत की आत्मा को कुंठित कर रखा था तथा उसके विकास की अनन्त शक्तियों को कुचल दिया था और आर्थिक दृष्टि से सर्वनाश कर दिया था। इस सबके लिए उन्होंने कहा कि हम निहित स्वार्थ लाभ की चिन्ता छोड़कर सच्चे और महान देश प्रेम को अपना लेगें तथा भारतीय प्राचीन संस्कृति को आत्मसात कर लेगे तो हम अंग्रेजों के फेके हुए टुकड़ों के लिए तरसना छोड़ देगे।

श्री अरविन्द सम्पूर्ण राष्ट्र के मानस को राष्ट्रीय स्वतंत्रता की भावना से भर देना चाहते थे जिसे उस समय के भारतीय इन सबको असंभव मानते थे। इसके लिए वे अंग्रेजों के आर्थिक बंधन को समाप्त कर उसके समान्तर भारतीय व्यवस्था तथा उद्योगों की उन्नति पर बल देते हैं जिससे देश की राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए चलने वाले क्रांतिकारी प्रयत्नों को सफलता मिल सके। प्राचीन भारतीय संस्कृति को याद दिलाकर वह उदारवादी नेताओं की याचना पद्धति पर कठोर प्रहार करते है और याचना करना, अपील करना, प्रार्थना करना आदि साधन को भारतीयों के आत्म सम्मान के विरूद्ध मानते है। जहाँ राष्ट्र सुरक्षित रहेगा तो हमारी संस्कृति भी सुरक्षित होगी। रौम्मे रोलॉ श्री अरविन्द को एशिया की प्रतिभा तथा यूरोप की प्रतिभा का सर्वोत्कृष्ट समन्वय मानते है जिसने भारतीय संस्कृति को पाश्चात्य संस्कृति पर सर्वश्रेष्ठ माना है।

अध्ययन का उद्देश्य–

1. श्री अरविन्द द्वारा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रवाद की अवधारणा की महत्ता प्रतिपादित करना।
2. भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को भारतीय जनमानस तक पहुँचा कर उन पर अमल करवाना तथा लोगों की अर्न्तात्मा को जगाना।

3. श्री अरविन्द के भारतीय सांस्कृतिक विचारों, कार्यक्रमों एवं पद्धतियों के आधार पर नागरिकों में इन विचारों के प्रति जागरूकता एवं नागरिकों में सद्गुणों का विकास करना।
4. राष्ट्रीय शिक्षा द्वारा प्रत्येक व्यक्ति में जिज्ञासा, खोज, विश्लेषण व संश्लेषण करने की प्रवृत्ति पैदा करना।
5. राष्ट्रवाद के संबंध में श्री अरविन्द के सांस्कृतिक, विविधतावादी व समन्वयवादी दृष्टिकोण व संस्कृति सम्बंधी विचारों की तुलना समकालीन राष्ट्रवादी नेताओं से करना।
6. आध्यात्मिक राष्ट्रवाद को भारतीय संस्कृति से जोड़कर उनका समग्र अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

श्री अरविन्द के राष्ट्रवाद एवं भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में किए गए इस शोध के उद्देश्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस विषय पर लिखे गए साहित्य का अवलोकन, विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया है–

1. अरविन्द घोष द्वारा लिखित पुस्तक ''मानव एकता का आदर्श'' (1969) एक महत्त्वपूर्ण रचना है जो प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध करवाती है। इस पुस्तक में उसने भारतीय संस्कृति के वाक्य ''वसुधैव कुटुम्बकम' के बारे में बताया है कि किस प्रकार इससे एक राष्ट्र का निर्माण होता है तथा कैसे एक राष्ट्र में एक विभिन्न जाति, धर्म, भाषा एवं सम्प्रदाय के लोग एक साथ मिलकर रहते हुए राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देते है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कोई भी राष्ट्र कोई भी कार्य यह सोचकर न करे कि इससे केवल उसी देश या राष्ट्र का लाभ होगा, बल्कि उसे पूरी मानव जाति के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए।
2. अरविन्द घोष द्वारा रचित पुस्तक ''आन हिम शेल्फ'' (1973) साहित्यावलोकन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसमें उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन का जन्म से लेकर मृत्यु तक का वर्णन किया है। इस सम्पूर्ण जीवन में उनके द्वारा पाश्चात्य संस्कृति, भारतीय राष्ट्रवाद, आध्यात्मवाद तथा राष्ट्रीय शिक्षा पर विस्तार से वर्णन किया है।
3. मंगेश नादकर्णी अपनी पुस्तक 'सावित्री' (9 मई, 2011) के माध्यम से मनुष्य मन को परात्पर तक उठाने और विस्तीर्ण करने वाली सर्वाधिक प्रभावपूर्ण काव्यात्मक कलाकृति का उदाहरण पेश करते है। इनके वह तीन विषय मानते है – प्रेम, मृत्यु तथा पृथ्वी पर जीवन।
4. के.एस. भारती द्वारा रचित पुस्तक ''एन साइक्लोपिडिया ऑफ इमिनेन्ट थिंकर्स सीरिज–10, वॉल्यूम –टप, दा पॉलिटिक्स थॉट ऑफ ओरोविन्दो घोष'', (1998) एक ऐसा अध्ययन है जो मूलतः अरविन्द घोष के राजनीतिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अरविन्द घोष ने उसके माध्यम से लोकतन्त्र, स्वतन्त्रता, संस्कृति, राष्ट्रवाद एवं मानवीय एकता के आदर्श का अध्ययन किया गया है।
5. श्री अरविन्द सोसायटी द्वारा प्रकाशित (2013), अनुवादक जगन्नाथ वेदालंकार, भारतीय संस्कृति के मूलाधार में श्री अरविन्द के विचारो की प्रभावपूर्ण व्याख्या की गई है तथा इसके साथ ही भारतीय कला, साहित्य एवं शासन प्रणाली पर युक्तिवादी आलोचना प्रस्तुत की गई है।
6. श्री अरविन्द सोसायटी द्वारा प्रकाशित (2016) ''मानव एकता का आदर्श : युद्ध एवं निर्णय'' में आधुनिक भारतीय चिन्तन में श्री अरविन्द के राष्ट्रवादी संरचना पर अच्छी तरह प्रकाश डाला गया है तथा विषम जातीय राष्ट्र के निर्माण पर ध्यान केन्द्रित किया है।
7. हरिराम जसटा द्वारा लिखित पुस्तक ''श्री अरविन्द का साहित्यिक दर्शन'' (1988) इस विषय के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है। इसके माध्यम से श्री अरविन्द के साहित्य दर्शन, मानवीय एकता एवं उनके आदर्श, काव्य सृजन तथा भावी कविता के स्वरूप का वर्णन किया है।
8. पुरूषोत्तम नागर की पुस्तक ''आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनैतिक विचार (2016) में वह अरविन्दों के राष्ट्रवादी विचार, शिक्षा संबंधी विचारों की उपयोगिता को रेखांकित करते है। वे मानते है कि वर्तमान में विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना का विकास श्री अरविन्द के राष्ट्रवादी विचारों के कारण ही संभव है।
9. वी.पी. वर्मा अपनी पुस्तक ''आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों (2017) में श्री अरविन्द को 'पुर्नजागरण के पुरोधा' के रूप में स्वीकार करते हुए उनके विचारों की महत्ता को रेखांकित करते है।
10. शिवप्रसाद सिंह द्वारा लिखित पुस्तक ''उत्तरयोगी श्री अरविन्द का जीवन एवं दर्शन, संस्करण – 2017 (लोक भारतीय प्रशासन, इलाहाबाद) में श्री अरविन्द को एक योगी के रूप में सिद्ध करते हुए उसकी समकालीन प्रासंगिकता को रेखाकित किया गया है। वर्तमान समय में श्री अरविन्द के राष्ट्रवादी विचारधारा को अपना कर देश में असमंजसता की स्थिति पर नियंत्रण किया जा सकता है। इस विचारधारा का प्रतिनिधित्व यह पुस्तक करती है।
11. प्रदीप नारंग एवं वंदना, मासिक पत्रिका (सितम्बर, 2017) ''अग्निशिखा'' में भय एवं क्रोध को मनुष्य की अतिमानसिक अवस्था में बहुत बड़ा अवरोध बताते हुए इन समस्याओं के निदान के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी है। भय एवं क्रोध पर प्रेम से विजय प्राप्त की जा सकती है। इसकी विस्तृत व्याख्या इस मासिक पत्रिका में की गई है।

परिकल्पना

1. श्री अरविन्द के विचारों से भारत के राजनीतिक, आध्यात्मिक, धर्म तथा अन्य विषयों पर ध्यान आकृष्ट किया है, उन सभी विषयों पर गूढ़ आलोचना–समालोचना में श्री अरविंद का चिंतन निश्चित तौर पर सहयोगी सिद्धध हो सकता है।

2. वर्तमान में भारत जिस धर्म और राजनीति में उलझा हुआ है तथा एक नाजुक दौर से गुजर रहा है, ऐसे समय में श्री अरविंद के विचार तथा उनकी अवधारणाएँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि उनके विचार आज भी इन सभी क्षेत्रों में प्रांसगिक है तथा उनकी उपयोगिता वर्तमान की सभी समस्याओं में निहित है।
3. वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है लेकिन अपने समाज एवं राज्य के प्रति अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को कर्त्तव्य जागरूकता के ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में अरविन्द का दर्शन अत्यन्त उपयोगी एवं प्रासंगिक है।
4. वर्तमान में युवा प्रेरणा स्रोत एवं युवाओं के वर्तमान जीवन चरित्र को अधिक उत्कृष्ट बनाने में श्री अरविन्द के दर्शन की अत्यंत प्रासंगिकता है।
5. भारत के युवाओं को जिन समस्याओं से संघर्ष करना पड़ रहा है तथा विद्यार्थियों में जो अनुशासनहीनता दिखाई पड़ती है उसे श्री अरविंद के चिंतन को स्वीकार करने से बहुत हद तक कम किया जा सकता है। श्री अरविंद ने केवल अधिकारों के लिए संघर्ष करने की अपेक्षा अपने कर्त्तव्यों को विशेष महत्त्व दिया तथा राष्ट्रवाद को हमेशा सर्वोपरि रखा।
6. आज भारत का युवा वर्ग श्री अरविंद के विचारों को अपना ले तो नौजवानों के संदर्भ में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं से मुक्ति पाई जा सकती है।
7. किसी भी देश के चरित्र निर्माण में मुख्य भूमिका उसकी शिक्षा पद्धति की है। शिक्षा के क्षेत्र में भी श्री अरविन्दों के विचार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक है।
8. धर्म, राजनीति एवं नैतिकता संबंधी विचारों का संतुलित समन्वय श्री अरविन्दों के दर्शन में देखा जा सकता है और इसी दर्शन की आधारशिला पर वर्तमान में भारतीय परिवेश में उत्पन्न हो रहे साम्प्रदायिक विद्वेष को समाप्त किया जा सकता है।
9. श्री अरविंद ने अपना एक ऐसा समग्र दृष्टिकोण देशवासियों के सामने रखा जिसकी वर्तमान में महत्ती आवश्यकता है। योग के रूप में भारतीय दर्शन में यह विचार सम्पूर्ण विश्व में योगा के रूप में प्रत्येक व्यक्ति की जीवनशैली में महत्वपूर्ण स्थान पा चुका है। इन सभी विचारों एवं क्रियात्मकता के पृष्ठ में श्री अरविन्दों का योगदर्शन नजर आता है।
10. भारत के लिए आने वाले समय में अनेक समस्याएं खड़ी है जिनमें जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भौतिकतावादी प्रवृति, भ्रष्टाचार इत्यादि। इन सभी समस्याओं का समाधान श्री अरविंद अपने दर्शन में देते है जिसमें वह आध्यात्मिकता, ध्यान एवं एकाग्रता, प्रार्थना आदि के माध्यम से करता है।

शोध पद्धति एवं अध्ययन क्षेत्र

शोध शब्द का प्रयोग किसी शोधन या वस्तु की खोज के लिए नहीं किया जा रहा है। यह उस क्रिया तथा प्रक्रिया का शोधक है जिसमें अनेक प्रकार के तथ्यों का एकत्रीकरण और उनके आधारों पर व्यापक निष्कर्ष निकालना सम्मिलित हे। इस प्रक्रिया में अन्वेषण और शोध की उप क्रियाएँ भी सम्मिलित है इस शब्द की प्रकृति के अनुसार पूछताछ, जाँच, गहन, निरीक्षण, व्यापक परीक्षण, योजनाबद्ध अध्ययन सौद्देश्य एवं तत्परता युक्त सामान्य निर्धारण आदि की प्रक्रियाएँ महत्वपूर्ण है।

शोध कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं है जो केवल धरातल पर ही खोज–बीन करे। इसमें गहन निरीक्षण मुख्य प्रत्यय है। समस्या का आरम्भ जिज्ञासा से होता है जिज्ञासु व्यक्ति ही शोध कार्य सफलता से कर सकता है जिज्ञासा के अभाव में वह क्रिया किसी भी रूप में सम्पन्न नहीं है। अतः जिज्ञासा का उत्पन्न होना ही शोध का मूल आधार है।

शोध की प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण सामान्य रूप से सदा क्रमबद्ध, सौद्देश्य एवं सुनिश्चित होता है। शोध की परीधि में निरीक्षण आता है केवल निरीक्षण तक ही शोध सीमित नहीं है।

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत में श्री अरविन्दों के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में प्रमुख राजनीतिक टीकाकार, अनुभवी राजनीतिक, प्रबुद्ध वर्ग एवं अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तिओं के साक्षात्कार एवं प्रश्नावली के माध्यम से प्रश्न पूछे गए है ताकि उपरोक्त विषय के संदर्भ में सटीक विश्लेषण किया जा सके। इसके अतिरिक्त सूक्ष्म अवलोकन हेतु विभिन्न स्थानों का दौरा कर विषय से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित की गई है ।

इसके अतिरिक्त द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकें, लेखों, समाचार पत्र, रिपोर्ट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सहयोग लिया गया है ।

शोध से प्राप्त परिणाम

श्री अरविन्द के अनुसार राष्ट्र एवं संस्कृति का स्वरूप

श्री अरविन्द शिक्षा को वह मानवीय समाज का मूल स्रोत मानते हैं, जिसके द्वारा ही मानव का सर्वांगीण विकास होता है। इसके द्वारा राष्ट्र का महत्त्व समझाकर तथा व्यक्ति का संतुलित एवं सामंजस्य पूर्ण विकास कर उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाया जाता है। श्री अरविन्द के दर्शन में न तो प्राचीन भारतीय आदर्शों के प्रति पलायन है और न ही पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण। उनकी दार्शनिक विचारधाराओं में दोनों का अद्भूत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में यह विश्वास जागृत करना है कि वह मानसिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण सक्षम है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति की अन्तर्निहित बौद्धिक एवं नैतिक क्षमताओं का सर्वोच्च विकास होना चाहिए। श्री अरविन्द ने राष्ट्र निर्माण की समूची परम्परा को अपने ढ़ंग से अग्रेषित करते हुए शैक्षिक पृष्ठभूमि में अपनी अलग पताका फहराई है।

सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के लिए तथा विश्व में शांति स्थापित करने के लिए उन्होंने 'अष्टांग योग' व 'सर्वांग योग' के पालन पर बल दिया। यह व्यक्ति को सफल एवं सभ्य बनाने में मदद प्रदान करती है जो भारतीय संस्कृति की प्राचीनता को जीवंत बनाता है। समाज को 'योग' से विशिष्ट कोई अन्य संकल्पना अद्यावधि तो अप्राप्त ही है। विश्व में सर्वत्र विद्यमान धर्म, देश, जाति आदि के आकर्षित विचारों से बना सम्पूर्ण संघर्ष अपने में बेहद स्वार्थी, भ्रामक और

वर्चस्व परक है। प्रायः इसे धर्म युद्ध, न्याय युद्ध या अस्मिता की लडाई कहकर लोगों का समर्थन जुटाया जाता है। यह एक ऐसा पथ है जिस पर निर्भय होकर स्वतंन्त्रता के साथ दुनिया का प्रत्येक इंसान चल सकता है और जीवन में पूर्ण सुख, शांति व आनन्द को प्राप्त कर सकता है। महर्षि पंतजलि द्वारा प्रतिपादित 'अष्टांग योग' तथा श्री अरविन्द का सर्वांग योग पथ कोई मत, पथ या संप्रदाय नहीं है, अपितु जीवन जीने की सम्पूर्ण पद्धति है। योग ही ऐसी शिक्षा पद्धति है जो व्यक्ति को शारीरिक एवं मानसिक रूप से परिपक्व करती है तो एक राष्ट्र के लिए सकारात्मक वातावरण का निर्माण करती है। आज के वैज्ञानिक युग में अंग्रेजी दवाओं से त्रस्त लोगों को शांति की आवश्यकता महसूस हो रही है। मनुष्य में निहित आध्यात्मिक, सामाजिक और मानसिक विकास योग से ही संभव है। यह सही है कि विज्ञान की सीमा जहाँ समाप्त होती है। वही से योग व आध्यात्म की सीमा प्रारम्भ होती है। जब मनुष्य सारी विधाओं से परेशान होकर असहाय हो जाता है तब वह योग की शरण में जाता है।

अतिमानस रूपी अवधारणा श्री अरविंदों के दर्शन का मुख्य केन्द्रीय विषय है। श्री अरविन्द ने मानवीय शरीर में अतिमानसी चेतना को अवतरित कराया था और उन्होंने न केवल उस लक्ष्य तक पहुंचाने तक पथ का स्वरुप तथा उसका अनुसरण करने की विधि ही हमारे सामने प्रकट की, बल्कि व्यक्तिगत रुप से उसकी सिद्धि प्राप्त कर हमारे सामने उसका उदाहरण भी रखा है। उन्होंने हमें इस बात का प्रमाण दे दिया है कि यह कार्य किया जा सकता हैं और उसके करने का समय भी यही है। मानव को रुपांतरित करके उसे अतिमानव बनाने की प्रक्रिया ही श्री अरविंद के योग की प्रक्रिया है और यही महान् रुपांतरण उनका ध्येय या लक्ष्य है। श्री अरविंद का योग चेतना की शक्ति का केंद्रीकरण है। वह मन के अतिक्रमण की प्रक्रिया है। उसमें ज्ञान, भक्ति और कर्म तीनों समाहित है। उनके विचारों से प्रभावित होकर आज भी स्वामी रामदेव, श्री श्री रविशंकर श्री अरविन्दो के योग, ज्ञान और भक्ति को आगे बढ़ा रहे हैं।

श्री अरविंद के जीवन की घटनाओं का लेखा–जोखा मिलना मुश्किल है। श्री अरविन्द को विविध भाषाओं का ज्ञान था ,लेकिन वो ज्ञान के बाहरी दिखावे में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने अपनी चीजों का संग्रह करने की कभी कोशिश नहीं की। बड़ौदा प्रवास के काल की बात है जब अंग्रेजी और संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् सर रमेशचन्द्र दत्त श्री अरविंद से मिलने आये। कुछ रद्दी कागजों पर कुछ लिखा हुआ देखा तो पढ़ने लगे। यह क्या ! यह तो वाल्मीकि रामायण का अंग्रेजी कविता में अनुवाद था। रमेश चन्द्र अपने आप यह कार्य कर चुके थे। इसलिये इसके मूल्य को जानते थे। उन्होंने श्री अरविंद से पूछा : ''यह क्या है ?'' श्री अरविंद ने सहज भाव से उत्तर दिया : ''संस्कृत सीख रहा हूँ और अभ्यास के लिये इधर–उधर से अनुवाद कर लेता हूँ।'' रमेश दत्त के मुंह से निकला : ''आपके अनुवाद को देखकर मुझे अपना अनुवाद किसी काम का नहीं लगाता !'' लैटिन और ग्रीक तो मानों श्री अरविंद की घुट्टी में पड़ी थी। एक बार फ्रेंच पुलिस के अफसर इन के घर की तलाशी लेने आये। श्री अरविंद अपने काम में लगे रहे और उन्हें कह दिया : ''तुम्हें जो देखना हो देख लो।'' उन्होंने देखा श्री अरविंद के यहां लैटिन और ग्रीक की पुस्तकें रखी हुई है। उन्होंने कहा : ''जो आदमी ये किताबें पढ़ता है वह कभी खतरनाक नहीं हो सकता।'' वे श्री अरविंद से क्षमा मांगते हुए वापस चले गये। विदेशी परिवेश में पढ़ाई करने के बावजूद उन्होंने भारतीय संस्कृति, भाषा को ज्यादा महत्त्व दिया। इसका परिणाम यह रहा कि वह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय नेता के रूप में अग्रणी रहा।

श्री अरविन्द ने जीवन और समाज के विविध पक्षों पर अपनी भूमिका और विचार प्रकट किए है। श्री अरविन्द की 'वन्दे मातरम्' और उदीपमान 'नेशनलिस्ट पार्टी' कोउनकी इतनी जरूरत थी कि उसने 1906 में राष्ट्रीय महाविद्यालय, कलकत्ता के प्राचार्य पद तक को छोड़ना पड़ा। उनके लिए शिक्षा के क्षेत्र में ज्यादा दिन रहना असंभव हो गया, क्योंकि अब वह राष्ट्र के लिए जन चेतना जागृत कराना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा का विकास, सभी राजकीय संस्थाओं से असहयोग तथा जीवन्त स्वयंसेवकों की सेना का गठन किया। इस राष्ट्रीय संघर्ष का परिणाम यह रहा कि आजादी का उद्देश्य पूरा होने तक ये चीजे संघर्ष की पृष्ठभूमि में आधारभूत विचार का काम कर रही थी। श्री अरविन्द देश को माँ के रूप में देखने पर बल देने तथा निर्भीक रूप से यह घोषणा करते है कि ''भारतीय राष्ट्रीय जागरण का उद्देश्य पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना है'', जिसका भारत के नवयुवकों पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे भारत में राजनीतिक लोकतंत्र की शिक्षा की जगह पहले समाज के लोकतन्त्रीकरण पर बल देते हैं। लोकप्रिय सरकार वाले सभी देशों के पास धन और साधन के साथ–साथ सामाजिक समानता भी है।

श्री अरविन्द के राष्ट्रवाद के विचार तिलक, लाजपतराय आदि से भी गहरे थे। जहाँ अन्य उग्रवादी नेताओं की राष्ट्रीयता स्वाधीनता के लिए एक राजनीतिक चीख पुकार था, वहाँ श्री अरविन्द की राष्ट्रीयता एक धार्मिक भावना से ओतप्रोत थी अर्थात् ईश्वर की वाणी मानव आत्मा की अभिव्यक्ति में थी। श्री अरविन्द के लिए उनका राष्ट्र भारत केवल एक भौगोलिक सत्ता था, प्राकृतिक भूमि का टुकड़ा मात्र नहीं था। उन्होंने स्वदेश, राष्ट्रीय शिक्षा को माँ माना है तथा माँ के रूप में उसकी भक्ति की। उन्होंने समस्त देशवासियों को अपनी मातृभूमि की रक्षा और सेना के लिए सभी प्रकार के कष्टों को सहने की धार्मिक अपील की। विदेशी अत्याचारों की बेड़ियों से जिस प्रकार हमारे स्वाभिमान पर चोट हो रही है, उसको देश से बाहर करना माता के सपूतों का कर्त्तव्य है। उसके अनुसार राष्ट्र, वह महाशक्ति है जो राष्ट्र का निर्माण करने वाली कोटि–कोटि जनता की सामूहिक शक्तियों का समाविष्ट रूप है। यही भारतीय संस्कृति की मूल भावना है।

राष्ट्रवाद एक धर्म है

श्री अरविन्द ने भारतीय संस्कृति में राष्ट्रवाद को एक धर्म बताया है, जो ईश्वर के पास से आया है तथा

इसी को लेकर हमें जीवित रहना है। राष्ट्रवाद ईश्वर का पर्याय है और उसको वह मानवीय वस्तु नहीं मानता, बल्कि ईश्वर मानता है। इसलिए राष्ट्रवाद को दबाया नहीं जा सकता, बल्कि यह तो ईश्वर शक्ति की सहायता से निरन्तर बढ़ती रहती है। उसके अनुसार राष्ट्रीय मुक्ति का प्रश्न एक परम् पवित्र यज्ञ है, जिसमें बहिष्कार, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा और अन्य कार्य अपना काम करते है, उसमें आहुति देते हैं। श्री अरविन्द ने राष्ट्रवाद को धार्मिक और आध्यात्मिक धरातल पर प्रतिष्ठित किया। उसके अनुसार राष्ट्रीयता एक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि वह एक धर्म है जो ईश्वर द्वारा प्रदत्त है। राष्ट्रीयता एक सिद्धान्त है जिसके अनुसार हमें जीना है। राष्ट्रवादी बनने के लिए राष्ट्रीयता के इस धर्म को स्वीकार करने के लिए हमें धार्मिक भावना का पूर्ण पालन करना होगा तथा देशवासियों को अपने अतीत के गौरव के प्रति गहरी आस्था जागृत करनी होगी।

श्री अरविन्द राष्ट्रीय दल और आंदोलन के अग्रणी नेता थे। यह केवल राजनैतिक नेतृत्व नहीं था और न केवल मानवीय योग्यता, यह कोई और आविर्भाव था, जिसने उन्हें भारत की आत्मा के अंदर खड़ा कर दिया था। आर.सी. मजूमदार के शब्दों में 'श्री अरविन्द ने उसका आध्यात्मीकरण किया था और वे एक धर्म के रूप में राष्ट्रीयता के पुरोधा बन गए थे। उन्होंने देश को 'ईश्वर की वेदी' पर रख दिया था और सर्वोत्तम अर्पण के रूप में उससे आत्मबलिदान की मांग की थी।' आज भी श्री अरविन्द के विचारों की देश की राजनीति ने ऊर्जा, वर्चस्व एवं अर्पण की उपयोगिता अपेक्षित है।

समाज मनुष्यों के मूल्यात्मक संबंधों की संरचना है। मनुष्य अपने आचार, विचार एवं व्यवहार की दृष्टि से राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आधारों पर परस्पर संबंधित है। श्री अरविन्द के विचार भारतीय राष्ट्रीयता में उपरोक्त सभी पहलुओं का समावेश है। श्री अरविन्द ने हमें वह मार्ग दिया है जो भविष्य की उस महिमा की ओर जाता है जिसे एक दिव्य इच्छा ने गढ़ा है। श्री अरविन्द संसार को भविष्य के सौन्दर्य के बारे में बताने के लिए आए थे, उस सौन्दर्य के बारे में जिसे अभी चरितार्थ होना बाकी है ,इसलिए श्री अरविन्द को 'भविष्य का व्यक्ति या अग्रदूत' कहा जाता है।

राष्ट्रवाद को ईश्वरीय आदेश और प्रेरणा बताकर श्री अरविन्द ने राष्ट्रवाद में एक नवीन चेतना भर दी। उन्होंने देशवासियों को कहा कि, आत्मा में ही शाश्वत शक्तियों का निवास है और आन्तरिक स्वराज्य प्राप्त कर लेने पर हमें सामाजिक दृढ़ता, बौद्धिक महत्ता, राजनीतिक स्वतन्त्रता आदि विश्व पर प्रभावकारिता सब कुछ स्वतः ही प्राप्त हो जाएगा। जन साधारण को उन्होंने राष्ट्रवाद का माध्यमिक स्वरूप समझाया और जनता के मन में यह बात बैठा दी कि राष्ट्रवाद उदान्त तथा देवी शक्ति का प्रतीक है। राष्ट्रीयता एक परमात्मा से उद्भूत एक धर्म है। राष्ट्रीयता ईश्वर की शक्ति में अमर होकर रहती है और उनका किसी भी शस्त्र से संहार नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष

श्री अरविन्द के अनुसार मानव का वर्तमान संकट मूल्यों का संकट है। पुराने मूल्यों से मनुष्य को चुनौती मिल रही है, जबकि नए मूल्य उनका स्थान लेने के लिए जूझ रहे है। अपने राष्ट्रवाद एवं भारतीय संस्कृति संबंधी दर्शन में श्री अरविन्द ने इस समस्या की ओर विशेष ध्यान दिया है। उसके अनुसार मूल्यों का निर्माण शारीरिक, मानसिक तथा उसी तरह आध्यात्मिक होना चाहिए। चरित्र निर्माण काफी हद तक उन मूल्यों पर ही निर्भर करता है। अनुरूपता, पारलौकिकता, देवत्व, क्रमिक आविर्भाव आदि मूल्यों को चरित्र में उतारकर उनका विकास किया जा सकता है, परन्तु इन सभी के पीछे सबसे आवश्यक मूल्य यथार्थता तथा निष्कपटता है। श्री अरविन्द केवल नैतिक सीमा ही निर्धारित नहीं करते, बल्कि वे उससे भी दूर जाकर गुण और दोष से ऊपर उठने की भी बात करते है। श्री अरविन्द के विचार से यह व्यक्ति और समूह दोनों के लिए अतिमानस की स्थिति है।

विश्व के इतिहास में श्री अरविंद जिस चीज का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह न कोई एक शिक्षा है, न कोई नूतन तत्वज्ञान; वह तो स्वयं परात्पर से आने वाली एक निर्णायक क्रिया है। सर्वव्यापी ईश्वर जिसकी प्राप्ति इसी जीवन में अतिमानस रूप में संभव है। श्री अरविंद हमें यह बतलाने के लिये कि सत्य पाने लिये पृथ्वी छोड़ने की आवश्यकता नहीं और भगवान् के साथ संपर्क स्थापित करने के लिये किन्हीं सीमित विश्वासों में बंध जाने अथवा जगत् से विमुख होने की भी आवश्यकता नहीं है। भगवान् सर्वत्र है, प्रत्येक वस्तु में हैं और यदि वे छिपे हुए हैं तो इसका कारण बस यह है कि हम उन्हें ढूंढ़ निकालने का कष्ट नहीं उठाते।

सुझाव

साधारणतया राष्ट्रवाद राष्ट्र के भीतर ईश्वरीय एकता में पाने की प्रेरणा है, यह एकता जिसमें अवयवों की तरह है, भले ही राजनीतिक, सामाजिक और आधारभूत या आर्थिक पक्षों के संदर्भ में उनका कार्य भिन्न और स्पष्टतः असमान ही क्यों ना हो। जिस ढंग का राष्ट्रवाद भारत विश्व के समक्ष प्रस्तुत करेगा, उसमें मनुष्य मनुष्य में, जाति–जाति में तथा वर्ग–वर्ग में मूलभूत समानता होगी।

हमारे धर्म की महत्त्वपूर्ण शिक्षा तथा भारतीय राष्ट्रवाद का प्रमुख कार्य यह है कि वह प्रत्येक देशवासियों तक अपने देश के धर्म और दर्शन का आदर्श पहुँचा दे। हम तानाशाही के विरूद्ध इसलिए है कि यह मौलिक समानता को राजनीति में नकारते हैं, हम जाति व्यवस्था के आधुनिक विरूपण पर आपत्ति करते हैं। परन्तु जहाँ तक राष्ट्रवाद का सन्दर्भ है, इसकी धारणा किसी भी स्वार्थ के साथ समझौता करने के प्रयास की पहुँच से परे रखी गई थी। इसी क्रम में सही ढंग की राष्ट्रीय एकता, देश के लिए आत्म–त्याग की एकता है, जबकि हमारी मातृभूमि की स्वाधीनता और महानता ही हमारी विचारधारा की सर्वोपरि वस्तु होती है। इसके समक्ष अन्य चीजें गौण रहती है।

योग एवं शिक्षा में स्वाभाविक संबंध है। शिक्षा के द्वारा छात्रों की अन्तर्निहित क्षमताओं, शक्तियों का पूर्ण विकास संभव है। शिक्षा एक कसौटी प्रदान करता है। यह ज्ञान ही हमें असत् से सत् की ओर, तम से ज्योति की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाता है। समस्त

संसार का स्वामित्व प्रदान करने वाला, यदि कोई है तो वह शिक्षा है। इसका प्रमुख उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्व का पूर्ण और संतुलित विकास करना है। यही कार्य योग द्वारा भी होता है। इससे छात्रों के व्यक्तित्व का पूर्ण और संतुलित विकास स्वाभाविक रूप से होता है। योग और शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है इसीलिए महर्षि अरविन्द ने कहा था–''सम्पूर्ण जीवन ही योग है।'' इस विधा द्वारा वे राष्ट्रीय एकता का स्वरूप मानवीय जीवन में प्रदान करते हैं।

ज्ञानी, योगी, साधक, उपासक एवं गुरु के रूप में श्री अरविन्द ने एक ही जीवन में सब कुछ साध लिया था, जिसका वर्णन भारतीय राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण माना जाता है। शोधार्थी का मानना है कि वर्तमान दौर जो कि न केवल राष्ट्रीय बल्कि अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर घोर राजनीतिक उथल–पुथल का दौर है। न केवल घटनाएँ तेजी से घट रही है और समाज सही दिशाओं की तलाश में है, बल्कि संदर्भों, मूल्यों, मान्यताओं, वर्जनाओं के क्षेत्र में भी एक अयुक्त बौद्धिक एवं असंतोष का दौर है। श्री अरविन्द ने भारतीय राष्ट्रीयता को न केवल तीव्र किया बल्कि वर्तमान में भय, अवसाद, नारी का सम्मान, योग, ध्यान, धर्म, नैतिकता तथा मानव तादात्म्य जैसे विषयों पर अपनी टिप्पणी दी।

श्री अरविन्द के अनुसार आज हमें अपने देश को पुनः संगठित करना है ताकि भौतिक शक्ति, आध्यात्मिक शक्ति के साथ मिलकर काम कर सके ताकि आन्तर और बाह्यता में एक सामंजस्य पैदा हो सके। यही श्री अरविन्द की राजनीति का मुख्य संदेश था। अरविन्दों के विचारों उनके दर्शन को स्वीकार कर एवं वास्तविक अर्थों में अपना कर न केवल भारतीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रवाद की भावना उत्कर्ष पा सकती है अपितु ''वसुधैव कुटुम्बकम'' भी अपने साकार रूप को पा सकता है। प्रत्येक जीव जगत में वसुदैव कुटुम्बकुभ की भावना के उत्कर्ष में ही श्री अरविन्द के विचारों की पूर्ण प्रासंगिकता निहित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अवसाद पर विजय और आंतरिक शांति, श्री अरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी पृ. 11, 17।

आंतरिक परिपूर्णता, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी

एम.पी. पंण्डित, श्री अरविन्द, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

एम.पी. पंडित, अनुवाद– श्री रविन्द, श्री अरविन्द, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।

करीम शबाना, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, मारूति प्रकाशन, दिल्ली रोड़ मेरठ (उत्तर–प्रदेश) पृ. 18, 21।

करीम शबाना, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, मारूति प्रकाशन, दिल्ली रोड़, मेरठ (उत्तरप्रदेश) पृ. सं. 11, 23।

खेतान, चंद्रप्रकाश और बगरिया, पंकज, भारत एवं उसकी संस्कृति की महानता, द रिसर्जेन्ट इण्डिया ट्रस्ट, झुन्झुनु – 333001, राजस्थान।

खेतान, चन्द्रप्रकाश एवं बगड़िया पंकज, भारत एवं उसकी संस्कृति की महानता, द रिसर्जेन्ट इण्डिया ट्रस्ट, झुन्झुनु पृ. 25.–29

चन्द्रदेव, अनुवादक हमारा योग और उनके उद्देश्य, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी पृ.सं. 6, 9, 13।

चिकित्सा, श्री अरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी

जीवन (श्रीमां–श्री अरविंद के वचन), श्री अरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी पृ. सं. 1, 13, 14।

प्रदीप नारंग एवं वंदना, अग्निशिखा, अखिल भारतीय पत्रिका, स्वाधीन चैटजी, पांडिचेरी, अंक फरवरी, 2018 पृ. 30–31।

प्रदीप नारंग एवं वंदना, अग्निशिखा, अखिल भारतीय पत्रिका, स्वाधीन चैटजी, पांडिचेरी, अंक सितम्बर, 2017 पृ. 40–41, 51।

बैरवा रामधन, विश्व का इतिहास, बाबा पब्लिकेशन चौड़ा रास्ता, जयपुर।

बसंत कुमार लाल, समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली वाराणसी, पटना 2016, पृ. 74–75

भट्टाचार्य, गोपाल, श्री अरविन्द और अतिमानस का आगमन, श्री अरविन्द आश्रम कॉटेज, डारेन्डा, रांची।

भट्टाचार्य, गोपाल श्री अरविन्द और अतिमानस का आगमन, श्री अरविन्द आश्रम कॉटेज, डोरन्डा, राँची पृ. 21

मसीह याकूब, पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

मित्तल रेणू, लोकतांत्रिक संस्थाओं एवं महिला सशक्तिकरण, बाबा पब्लिकेशन चौड़ा रास्ता जयपुर।

मधुर मां, श्री अरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी पृ.सं. 45–46।

योग का प्रारंभ, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी पृ. सं. 38–39, 55, 56, 58।

लाल, प्रो. बी.के., समकालीन पाश्चात्य दर्शन, मोती लाल बनारसीदास, जवाहर नगर, दिल्ली।

रेड्डी कृष्णा, इण्डियन हिस्ट्री, मैक्ग्रो हिल्स प्रा.लि. चेन्नई।

रवीन्द्र, श्री अरविन्द : जीवन और दर्शन, श्री अरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी पृ.सं. 17, 23, 83–98।

रविन्द्र, श्री अरविन्द : जीवन और दर्शन, 1980, श्री अरविन्द सोसायटी पांडिचेरी, पृ. 18, 22, 83।

राधाकृष्ण, ध्यान, साधना के प्रयोग, आचार्य अमित पाकेट बुक, जालन्धर (पंजाब) पृ. सं. 22–23।

रोग–2 (श्री अरविन्द तथा श्रीमां की रचनाओं से विजय द्वारा संकलित), श्री अरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी–2 पृ. 8–9।

वर्मा वी.पी., आधुनिक भारतीय राजनैतिक विचारक, 2017, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशक आगरा, पृ. 35।

वन्देमात्रम, श्री अरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी ।

शर्मा छोटे नारायण, श्री अरविन्द, नवज्योति कार्यालय, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी पृ. सं. 30–40, 46, 47, 54, 55, 61।

सत्यप्रेम, श्री अरविन्द अथवा चेतना का साहसिक अभियान, मीरा अदिति, मैसूर

सावित्री, नाडकर्णी मंगेश, श्री अरविन्द सोसायटी, सेंटर उज्जैन (म.प्र.) पृ. 3, 10 संस्करण 2016।

सम्पूर्ण योग शास्त्र, पं. विवेक श्री कौशिक 'विश्वममित्र' पवन पॉकेट बुक्स, 4537, दाईवाडा, नई सड़क, दिल्ली।

श्री अरविन्द, मानव–एकता का आदर्श, श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी।

श्री अरविन्द, भारतीय संस्कृति के आधार पर, श्री अरविन्द आश्रम , पाण्डिचेरी।

श्री अरविन्द, मानव एकता का आदर्श युद्ध और आत्म निर्णय, श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी पृ. 13–19

श्री अरविन्द, वन्देमातरम, श्री अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी, पृ. 30

श्री अरविन्द, जीवन का सच्चा लक्ष्य, श्री अरविन्द सोशायटी, जयपुर शाखा।

श्री अरविन्द, प्रेम, (श्रीमां–श्री अरविन्द के लेखों से संकलित), श्री अरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी पृ. 1, 14।

श्री अरविन्द, नर और नारी (श्रीमां व श्री अरविंद के लेखों से संकलित) श्री अरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी पृ. 42, 44, 46, 47, 48।

श्री अरविन्द, ध्यान, श्री अरविंद सोसायटी, पांडिचेरी पृ. 22–23।

श्री अरविन्द, ध्यान और एकाग्रता, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी पृ. 13–14, 20,, 22।

शांति देवबाला, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त, प्रकाशक ब्रह्मदत्त दीक्षित, निदेशक उत्तरप्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1993,

विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशक, आगरा– 3, 1971

श्री अरविन्द, मानव एकता का आदर्श, श्री ओरोविन्दो आश्रम, प्रकाशन विभाग, पाण्डिचेरी, फरवरी, 1969

इकबाल नारायण, भारतीय राजनीतिक विचारक, ग्रन्थ विकास, सी–37 राजापार्क, बर्फखाना, जयपुर, 2001

द हिस्ट्री ऑफ इण्डियन नेशनल कांग्रेस, प्रथम भाग

संघर्ष, वर्ष 20, अंक 26, नरेन्द्र देव विशेषांक।

नेविन्सन, न्यू स्पिरिन इन इण्डिया

वन्देमातरम् : श्री अरविन्द का लेख।

डॉ. कर्णसिंह : भारतीय राष्ट्रीयता का अग्रदूत

वी.पी. वर्मा : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन

शर्मा, योगेन्द्र कुमार ; द डाक्ट्रिन ऑफ द ग्रेट इण्डियन एजुकेटर्स, 2004